अलीगढ़ पुलिस ने कहा, एएमयू के छात्र देशद्रोही नहीं हैं देश के कथित राष्ट्रीय हिंदूवादी मीडिया की पोल खुली

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

अलीगढ़: नफरत का धंधा करने वालों की अलीगढ़ में करारी हार हुई है। अलीगढ़ पुलिस ने कहा है कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) के जिन 14 छात्रों पर देशद्रोह का आरोप लगाकर एफआईआर दर्ज की गई थी, उसमें से देशद्रोह के आरोप की धारा हटा दी गई है। अलीगढ़ के एसपी आकाश कुलहरि का कहना है कि हमें उन 14 छात्रों के खिलाफ देशद्रोह का कोई सबूत नहीं मिला है।

बहुत बड़ी साजिश थी वह घटना

14 फरवरी को एएमयू छात्रसंघ ने सोशल साइंस फैकल्टी के कॉन्फ्रेंस हॉल में कई राजनीतिक पार्टियों के नेताओं की बैठक बुलाई थी. इस कार्यक्रम में ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के नेता और सांसद असदुद्दीन ओवैसी को भी बुलाया गया था। ओवैसी के यूनिवर्सिटी कैंपस में आने को लेकर छात्रों का एक दूसरा गुट काफी नाराज था और प्रदर्शन कर रहा था। विरोध कर रहे छात्रों के गुट का नेतृत्व अजय सिंह और मुकेश सिंह लोधी कर रहा था। इस दौरान छात्रों के दो गुटों में मारपीट हो गई। इनमें मुकेश सिंह लोधी भारतीय जनता युवा मोर्चा अलीगढ़ का अध्यक्ष है लेकिन एएमयू का छात्र नहीं है।

मारपीट की इस घटना के बाद मुकेश सिंह लोधी ने एफआईआर दर्ज कराई कि कुछ छात्रों ने कार्यक्रम के बाद यूनिवर्सिटी कैंपस में एक जुलूस निकाला जिसमें 'भारत विरोधी' नारे लगाए गए। लेकिन एएमयू स्टूडेंट यूनियन के नेताओं ने पुलिस को बताया कि अजय सिंह और मुकेश ने यूनिवर्सिटी के छात्रों को न सिर्फ पीटा बल्कि फायरिंग भी की। अजय सिंह बरौली से बीजेपी विधायक दलवीर का पोता है और भारतीय जनता युवा मोर्चा में भी सक्रिय है।

एएमयू स्टूडेंट्स यूनियन ने पुलिस को कुछ सबूत भी दिए, जिसमें उस दिन की घटना का एक फोटो था, जिसमें मुकेश सिंह लोधी यूनिवर्सिटी कैंपस में कट्टा लहराता दौड़ रहा है। इसके अलावा एक विडियो भी सामने आया जिसमें दो छात्र गुटों में मारपीट हो रही है लेकिन उसमें किसी तरफ से भारत विरोधी या पाकिस्तान के समर्थन में किसी तरह की कोई नारेबाजी नहीं हो रही है।

अलीगढ़ पुलिस ने इन सबूतों को नजरन्दाज करते हुए, किसी तरह की कोई जांच न करते हुए मात्र भगवा गुंडे मुकेश लोधी की एफआईआर पर जेएनयू की तरह एएमयू के 14 नामजद छात्रों पर देशद्रोह की धारा लगा दी।

एफआईआर दर्ज होने के बाद एएमयू के सभी छात्र भड़क उठे। हजारों की तादाद में छात्रों ने यूनिवर्सिटी कैंपस में अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया। कोई भी राष्ट्रीय मीडिया और यहां तक की लोकल मीडिया एएमयू छात्रों के इस आंदोलन को कवर करने नहीं पहुंचा। राष्ट्रीय मीडिया को सारे सबूत सौंपे गए लेकिन कोई भगवा गुंडों और अलीगढ़ पुलिस की करतूत के खिलाफ बोलने को तैयार नहीं हुआ। लेकिन सोशल मीडिया एएमयू छात्रों के साथ खड़ा हो गया। तब अलीगढ़ पुलिस को जांच करनी पड़ी और कहना पड़ा कि देशद्रोही नारे लगाने जैसी कोई घटना नहीं हुई है। हमें मुकेश सिंह लोधी, अजय सिंह और अन्य नेता इस तरह का कोई सबूत नहीं दे पाए। इसलिए देशद्रोह की धारा हटाई जाती है।

हिंदूवादी मीडिया की शर्मनाक भूमिका

एएमयू में किसी भी घटना के होने पर मीडिया की शर्मनाक भूमिका बार-बार सामने आती रही है। 14 फरवरी की घटना के बाद मोदी के दलाल पत्रकार अरणब गोस्वामी के रिपब्लिक भारत चैनल के पत्रकार वहां पहुंचे और वहां इस तरह की खबर बनाने की कोशिश करने लगा कि एएमयू कैंपस में भारत विरोधी नारे लगे और उनके सामने भी नारे लगे। यहां के छात्र पाकिस्तानी मानसिकता के हैं, यहां हिंदू छात्रों के साथ मुस्लिम छात्र गलत व्यवहार करते हैं। लेकिन रिपब्लिकर टीवी के पत्रकारों की इस हरकत का यूनिवर्सिटी छात्रों ने विरोध कर दिया। लेकिन उसी दिन रात को रिपब्लिक टीवी ने बताया कि एएमयू तो देशद्रोहियों का गढ़ बन चुका है। लेकिन एएमयू में पढ़ने वाले हिंदू छात्र सामने आ गए, उन्होंने अपने विडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाला और बताया कि यहां पर सभी हिंदू छात्र बहुत मजे में हैं और बेहतर ढंग से बहुत अच्छे लेवल की पढ़ाई कर रहे हैं। हमारी यूनिवर्सिटी को बर्बाद करने की यह साजिश है। सोशल मीडिया पर फैले इस विडियो ने भगवा गुंडों और हिंदूवादी मीडिया की पोल खोल दी।

देशद्रोह की धारा हटाने की सूचना देने के लिए अलीगढ़ के एसपी आकाश कुलहरि ने सभी पत्रकारों को प्रेस कॉन्फ्रेंस में बुलाया। तथाकथित राष्ट्रीय मीडिया ने आकाश कुलहरि के देशद्रोह हटाने वाले बयान को संक्षेप खबर में छापा, जबकि किसी भी चैनल ने इस खबर को महत्व नहीं दिया। जबकि जब देशद्रोह वाली एफआईआर दर्ज हुई तो उसे हिंदूवादी प्रिंट और टीवी मीडिया ने बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया था। ऐसा हर बार होता है, एएमयू की फर्जी खबरों को राष्ट्रीय मीडिया बढ़ाचढ़ा कर पेश करता है जबकि जब उनकी पोल खुलती है तो उस खबर को संक्षेप में या पूरी तरह गोल कर दिया जाता है।

अभी हाल ही एएमयू से पढ़े हुए मनोज यादव को हरियाणा का डीजीपी बनाया गया है। राष्ट्रीय मीडिया के लिए यह कोई खबर नहीं थी। एएमयू से पढ़े हुए और अब जेएनयू के रिसर्च फेलो अभय कुमार ने हाल ही में लिखे अपने एक लेख में कहा है कि एएमयू के साथ हिंदूवादी मीडिया का यह व्यवहार नया नहीं है। पढ़ाई, तहजीब और तमीज के मामले में हमेशा से अव्वल रही इस यूनिवर्सिटी को बर्बाद करने की साजिश कई साल से हो रही है। कभी इसका अल्पसंख्यक दर्जा छीनने के लिए इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की जाती है तो कभी यहां किसी बड़े स्कॉलर के आने पर बाहर से शरारती तत्व आकर यहां नारेबाजी और हिंसा करते हैं।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

प्रवृत्ति व प्रकृति को जानें

अपनी प्रवृत्ति व प्रकृति को जानें इस ब्रह्मांड की रचना ईश्वर की देन है। ईश्वर द्वारा रचित प्रत्येक प्राकृतिक तत्व में कोई न कोई उत्तम प्रकृति का गुण विद्यमान है। जिस प्रकार प्रत्येक कंदमूल में कोई न कोई औषधिय गुण होता है, उसी प्रकार मनुष्य में भी ईश्वर ने कई प्राकृतिक गुणों का समावेश किया है। आवश्यकता इस बात की है कि हम मनुष्य अपने अंदर छिपे इन गुणों को जान व समझें। जिस प्रकार प्रकृति स्वयं को समझते हुए अपने अनुरूप, प्रत्येक तत्वों का संग्रह कर लेती है अर्थात खाद, पानी व सूर्य का प्रकाश लेकर विकसित होती है। उसी प्रकार प्रत्येक बालक में भी अलग- अलग फलों के गुण विद्यमान होते हैं।

प्रत्येक बालक किसी-किसी न फल का बीज होता है। यदि बालक को उसके गुण के अनुरूप ही भोजन, पानी, शिक्षा, आचार्य व वातावरण मिले तो वह अवश्य ही समृद्ध होगा व विकसित होगा। जिस प्रकार एक घना वृक्ष औरों को फल, फूल, छायाँ, लकड़ी व प्राणवायु प्रदान करता है। उसी एक समृद्ध, विकसित व चरित्रवान बालक भी समाज को बहुत कुछ दे सकता है। अक्सर हम अपने बच्चों को सफलता की चाह तो रखते हैं और सफलता प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास भी करते हैं पर कई बार हम अपने प्रयासों में सफल नहीं हो पाते। तब हम में से कई माता- पिता निराश हो जाते हैं और अवसाद से घिर जाते व बच्चे भी निराश हो जाते हैं। यह समस्या का कोई हल नहीं है बल्कि उस समय हमें यह सोचना चाहिए कि अथक प्रयास करने के उपरांत भी हमारे बालक को सफलता क्यों नहीं मिली? वास्तव में हम सभी को सर्वप्रथम अपने अंदर छिपे गुणों को जानना होगा और उसी दिशा में प्रयास करना होगा। साथ ही यह भी प्रयास करना होगा कि हमारे बच्चों को भी उनकी प्रकृति के अनुरूप ही वातावरण भी प्राप्त हो। इस प्रकार संतुलित ढंग से कार्य करने पर हमें व हमारे बच्चें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी।

यह सप्ताह / जीवन किस लिये

अकबर ने एक दिन तानसेन को कहा, तुम्हारे संगीत को सुनता हूं, तो मन में ऐसा ख्याल उठता है कि तुम जैसा गाने वाला शायद ही इस पृथ्वी पर कभी हुआ हो और न हो सकेगा। क्योंकि इससे ऊंचाई और क्या हो सकेगी, इसकी धारणा भी नहीं बनती। तुम शिखर हो। लेकिन कल रात जब तुम्हें विदा किया था, और सोने लगा तब अचानक ख्याल आया। हो सकता है, तुमने भी किसी से सीखा है, तुम्हारा भी कोई गुरू होगा। तो मैं आज तुमसे पूछता हूँ कि तुम्हारा कोई गुरु है? तुमने किसी से सीखा है?

तानसेन ने कहा, मैं कुछ भी नहीं हूँ गुरु के सामने; जिससे सीखा है। उसके चरणों की धूल भी नहीं हूँ । इसलिए वह ख्याल मन से छोड़ दो। शिखर? भूमि पर भी नहीं हूँ । लेकिन आपने मुझे ही जाना है। इसलिए आपको शिखर मालूम पड़ता हूँ। ऊँट जब पहाड़ के करीब आता है, तब उसे पता चलता है, अन्यथा वह पहाड़ होता ही है। मैं गुरु के चरणों में बैठा हूँ मैं कुछ भी नहीं हूँ । कभी उनके चरणों में बैठने की योग्यता भी हो जाए, तो समझूंगा बहुत कुछ पा लिया। तो अकबर ने कहा, तुम्हारे गुरु जीवित हों तो तत्क्षण, अभी और आज उन्हें ले आओ। मैं सुनना चाहूंगा। पर तानसेन ने कहा, यही तो कठिनाई है। जीवित वे हैं लेकिन उन्हें लाया नहीं जा सकता।

अकबर ने कहा, जो भी भेंट करना हो, तैयारी है। जो भी। जो भी इच्छा हो, देंगे। तुम जो कहो, वहीं देंगे। तानसेन ने कहा, वही कठिनाई है, क्योंकि उन्हें कुछ लेने को राज़ी नहीं किया जा सकता। क्योंकि कुछ लेने का प्रश्न ही नहीं है।

अकबर ने कहा, कुछ लेने का प्रश्न नहीं है तो क्या उपाय किया जाए? तानसेन ने कहा, कोई उपाय नहीं, आपको ही चलना पड़ेगा। अकबर ने कहा, मैं अभी चलने को तैयार हूँ। तानसेन ने कहा, अभी चलने

कोलंबा कालीधर

से तो कोई सार नहीं है। क्योंकि कहने से वह गायेंगे नहीं। ऐसा नहीं है वे गाते बजाते नहीं हैं। तब कोई सुन ले बात और है। तो मैं पता लगाता हूँ कि वह कब गाते-बजाते हैं तब हम चलेंगे।

पता चला—हरिदास फकीर तानसेन के गुरु थे। यमुना के किनारे रहते थे। पता चला रात तीन बजे उठकर वह गाते हैं नाचते हैं तो शायद ही दुनिया के किसी अकबर की हैसियत के सम्राट ने तीन बजे रात चोरी से किसी संगीतज्ञ को सुना हो। अकबर और तानसेन चोरी से झोपड़ी के बाहर ठंडी रात में छिपकर बैठ गये। पूरी रात इंतजार करने के बाद सुबह जब बाबा हरिदास ने भक्ति भाव में गीत गया और वे मस्त हो कर डोलने लगे। तब अकबर की आँखों से झर-झर आंसू गिर रहे थे। वह केवल मंत्र मुग्ध हो कर सुनते रहे एक शब्द भी नहीं बोले।

संगीत बंद हुआ। वापस घर जाने लगे। सुबह की लाली आसमान पर फैल रही थी। अकबर शांत मौन चलते रहे। रास्ते भर तानसेन से भी नहीं बोले। महल के द्वार पर जाकर तानसेन से केवल इतना कहा, अब तक सोचता था कि तुम जैसा कोई भी नहीं गा बजा सकता है। मेरा भ्रम आज टूट गया। अब सोचता हूँ कि तुम हो कहाँ लेकिन क्या बात है? तुम अपने गुरु जैसा क्यों नहीं गा सकते हो?

तानसेन न कहा, बात तो बहुत साफ है। मैं कुछ पाने की लिए बजाता हूँ और मेरे गुरु ने कुछ पा लिया है इसलिए बजाते गाते हैं। मेरे बजाने के आगे कुछ लक्ष्य है। जो मुझे मिले उसमें मेरे प्राण हैं, इसलिए बजाने में मेरे प्राण पूरे कभी नहीं हो पाते। बजाते-गाते समय मैं सदा अधूरा रहता हूँ। अंश हूँ। अगर बिना गाए-बजाए भी मुझे वह मिल जाए जो गाने से मिलता है तो गाने-बजाने को फेंककर उसे पा लूँगा। गाना मेरे लिए साधन है। साध्य नहीं। साध्य कहीं और है—भविष्य में, धन में, यश में, प्रतिष्ठा में—साध्य कहीं और है। संगीत सिर्फ साधन है। साधन कभी आत्मा नहीं बन सकता; साध्य में ही आत्मा का वास होता है। अगर साध्य बिना साधन के मिल जाए, तो साधन को छोड़ दूँ अभी। लेकिन नहीं मिलता साधन के बिना, इसलिए साधन को खींचता हूं। लेकिन दृष्टि और प्राण और आकांक्षा, सब घूमता है साध्य के निकट। लेकिन जिनको आप सुनकर आ रहे हैं, संगीत उनके लिए कुछ पाने का साधन नहीं है। आगे कुछ है जिसे पाने को वह गा-बजा रहे हैं। बल्कि पीछे भी कुछ है, वह बह रहा है। जिससे उनका संगीत फूट रहा है और बज रहा है। कुछ पा लिया है, कुछ भर गया है। वह बह रहा है। कोई अनुभूति, कोई सत्य, कोई परमात्मा प्राणों में भर गया है। अब वह बह रहा है। पैमाना छलक रहा है आनंद का। उत्सव का।

अकबर बार-बार पूछने लगा, किस लिए? किस लिए?

स्वभावत: हम भी पूछते हैं, किस लिए? पर तानसेन ने कहा, नदिया किस लिए बह रही है? फूल किस लिए खिल रहे हैं? चाँद-सूरज किस लिए चमक रहे हैं? जीवन किस लिए बह रहा है? किस लिए मनुष्य की बुद्धि ने पैदा किया है। सारा जगत भीतर से जी रहा है। इसलिए हर व्यक्ति आत्ममंथन करे तो स्वत: ही ज्ञान हो जाएगा।

जज साहेबान ! बस इतना बता दीजिए बेला एक्का अब कहां लौटेंगी ?

वीना

आदिवासियों-मूलनिवासियों को उनके गांव, घर-मीन से बेदखल करने के सुप्रीम कोर्ट के हैरान-परेशान करने वाले फैसले से बरबस ही मुझे दिवंगत प्रसिद्ध साहित्यकार अरुण प्रकाश की चर्चित कहानी – "बेला एक्का लौट रही है" याद आ गई।

बेला एक्का झारखण्ड के गांव की एक गरीब आदिवासी लड़की है। पढ़ने में होशियार बेला रांची आदिवासी हॉस्टल में रह कर जैसे-तैसे बीए और फिर टीचर ट्रेनिंग कर लेती है। आदिवासी कोटे से अध्यापिका की नौकरी के लिए बिहार के बेगूसराय किले जाती है। यहां स्कूल का कल्याण अधिकारी बेला का यौन शोषण करने पर उतारू है। क्योंकि बेला की नौकरी पक्की करने वाली फाइल उसके टेबल से गुजरकर जानी है।

बेला को बताया जाता है कि कल्याण अधिकारी के शोषण से तंग आकर एक आदिवासी लड़की पहले भी आत्महत्या कर चुकी है। पर बेला खुद को खत्म करने की बजाय अन्याय के खिलाफ लड़ाई का चुनाव करती है। वो उच्च अधिकारी से कल्याण अधिकारी की शिकायत करती है। पर बेला सा साहस सबके पास नहीं।

हालांकि कल्याण अधिकारी से सब परेशान थे। फिर भी उसके रुतबे और गुंडा टोली के डर से किसी ने उसके खिलाफ गवाही नहीं दी। नतीजतन बेला झूठी करार दी जाती है। और कल्याण अधिकारी के जाल में छटपटाने को अकेली छोड़ दी जाती है।

गरीब आदिवासी मां-बाप की बेटी बेला के पिता ने उधार लेकर 500 रूपये जुटाए थे। बेला को नौकरी की जगह पहुंचने और तनख्वाह मिलने तक खर्च के लिए। नौकरी कर मां-बाप को बेहतर जिन्दगी देने की तमन्ना रखने वाली बेला गरीबी में गुजारा कर लेगी। पर अपने जिस्म का सौदा नहीं करेगी। आखिरकार नौकरी से इस्तीफा देकर बेला अपने जंगल-गांव-घर लौट जाती है।

20 फरवरी 2019 को देश की सर्वोच्च अदालत ने फरमान सुनाया है कि देश भर में बेला एक्का और उसके जैसे लाखों परिवारों (गरीब एक करोड़ आदिवासियों) को उनके जल-जंगल-जमीन, गांव-खेत से बेदखल कर दिया जाए।

कोई बेला एक्का, कभी किसी कल्याण अधिकारी की यौन कुंठा का शिकार होने से बचने के लिए अपने घर-माटी की सुरक्षा न पा सके। क्या यही इरादा है वातानुकूलित कमरों में ऊंचे, मखमली, सिंहासनों पर बैठे जज-जजनी साहेबान आपका?

क्या आपको पता है साहेबान! जिन्हें आप जंगलों से, उनके घरों से जंगल बचाने के नाम पर भगा रहे हैं। उन्हीं की वजह से जंगल अब तक बचे हुए हैं। ये जंगल-पेड़ उनके परिवार का हिस्सा होते हैं। कोई काटने आए तो ये पेड़ों से अपनी औलाद की तरह चिपक जाते हैं। क्या आपको पता है? जिस कीमती लकड़ी की शानदार कुर्सी पर आप सब हुजूर-ए-वाली तशरीफ फरमा हैं इन्हें जंगल से चुराकर, या जोर-जबरदस्ती से कौन यहां तक लाता है? मुनाफे और सिर्फ मुनाफे के लालच में। जंगल के दावेदार कहते हैं कि जो जंगल बचाने की गुहार लेकर आपके पास आए हैं वो और उनके पालनहार आका।

क्या आप जानते हैं? तेन्दु पत्ता, महुआ, साल बीज, इमली, आमला, चिरोंजी, चिरैता, वन तुलसी, आदि पेड़-पौधे हैं। प्रकृति के पूरक हैं। जिन्हें आप जंगल के गुनहगार करार दे रहे हैं उनकी जिंदगी के हिस्से हैं। और सरकार को होने वाली कमाई में भागीदार भी हैं।

अगर आपको ये नहीं पता कि आपके रुतबे, गाड़ी-बंगले, नौकरों-अर्दलियों के लिए खर्च होने वाले धन में इनकी खून-पसीने की कमाई भी शामिल है। तो फिर आप, आपका ज्ञान किस काम के? आप न सिर्फ इन्हें बेघर-बेरोजगार कर रहे हैं बल्कि इनके पाले-पोसे जंगलों को भी अनाथ कर रहे हैं।

ये जंगल के दावेदार हैं तो ये कायनात सुरक्षित है। वरना आपकी गलीच शहरी बस्तियों में रखा क्या है?

नहीं भूलती मुझे सालों पहले झारखण्ड के अखबार में पड़ी वो बेशर्म-खौफनाक हकीकत। एक नाबालिक आदिवासी लड़की संदूक के साथ जब अपने घर लौटती है। और छोटे भाई-बहन उत्सुकतावश जब बड़ी बहन का सन्दूक खोलते हैं तो चंद फटे-पुराने चीथड़ों के बीच पाते हैं उसकी को? से निकला मालिक की हवस का सबूत। एक मरा हुआ बालक!

तो बताएं साहेबान! ये संदूक अब किस पते पर पहुंचा करेंगे?

क्या इन पर आदिवासियों को भगाकर जंगल हड़पने में प्रथम स्थान पाने को आतुर मुकेश अंबानी के कुख्यात महल एंटीलिया का पता चस्पा किया जाएगा? या प्रधानमंत्री निवास? याकि फिर मुख्यमंत्री निवासों में इंतजाम होगा?

बेला एक्का अगर इस सन्दूक षड्यंत्र को अपनी बलि देने से इंकार करें तो अब कहां लौटेंगी?

क्या अम्बानी-अडानी, टाटा-बिड़ला, मित्तल-जिंदल, वेदांता आदि-आदि कुछ ठौर-ठिकाने मुहैया करवाएंगे? आखिर कहां? कहां होंगे इनके दरिद्र ठिकाने?

क्या आपके पास पहुंचने वाले इन तथाकथित जंगल बचाओ रसूखदार ठेकेदारों ने इंसानों को बचाने के लिए अपने महलों-कोठियों के पते लिखवाए हैं?

अगर अब तक ऐसा नहीं हुआ है जनाब तो जल्दी आदेश दें। वरना दिकू (बाहर वाले, शोषणकर्ता) दलालों को जंगल के दावेदार इण्डिजिनस ललकारा चुके हैं।

कहानी 'बेला एक्का लौट रही हैं' में अरुण प्रकाश ने लिखा है – "छोटे लोगों के सपने बड़े लोगों के जूते की नोक पर टिके रहते हैं। जरा मस्ती में पैर ही झटक दिया, सपनों का शिराजा बिखर जाता है।?

लाखों के लिबास और ठोकरमार जूतों में सजे प्रधानमंत्री मोदी सुना है दक्षिण कोरिया में महात्मा गांधी की प्रतिमा का उद्घाटन करते हुए कह रहे थे –"गांधीजी ने इतना सादा जीवन जिया कि पर्यावरण को बिल्कुल प्रदूषित नहीं किया।"

आप जो इंसाफ के नाम पर जुल्म करने पर आमादा हैं साहब,अब ये अदा बेमानी है!

याद रहे-जुल्म फिर जुल्म है, बढ़ता है तो मिट जाता है।

एक कश्मीरी बच्ची की नसीहत है।

जंगल के दावेदार, भारत के पहले आदिविद्रोही तिलका मांझी उर्फ जबरा पहाड़िया, संथाल हूल (विद्रोह) के सिधु-कान्हू, चांद-भैरो भाइयों, फूलो-झानो जुड़वा बहनों और बिरसा मुंडा के वंशज अब जुल्म नहीं सहने वाले।